प्रगति-आख्या

2004-2009

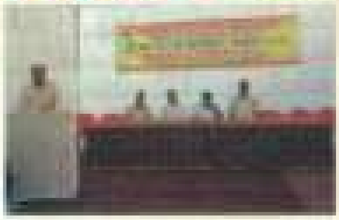

काशी योग एवं मूल्य-शिक्षा संस्था
(Kashi Institution of Yoga and Value - Education)
35, दीनदयाल नगर कालोनी, नवाबगंज
वाराणसी, (उ०प्र०) 221010
फोन : +91 (0542) 6529917
मो : 09450872823
E-mail : kashiyogasanstha@gmail.com
: mulyabodh@yahoo.co.in

संरक्षक

परमपूज्य कार्ष्णि स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज (रमणरेती, मथुरा)

अध्यक्ष

प्रो० कमलाकर मिश्र

उपाध्यक्ष

प्रो० अजित नारायण त्रिपाठी

कोषाध्यक्ष

प्रो० विभा त्रिपाठी

सचिव

डॉ० धर्मेन्द्र कुमार मिश्र

सदस्य

प्रो० सुभाषचन्द्र लखोटिया

प्रो० चन्द्रकला पाडिया

प्रो० हरिशंकर सिंह

डॉ० मारकन्डे राम पाठक

डॉ० धर्मजंग

स्वामी बृज चैतन्य

डॉ० प्रमोद कुमार सिंह

संस्था के उद्देश्य एवं कार्य

- शैक्षणिक उत्थान हेतु विभिन्न स्तरीय विद्यालयों की स्थापना कर सामान्य, व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा, शारीरिक एवं मूल्य–शिक्षा, योग, कला, संगीत, विज्ञान व चिकित्सा आदि से सम्बन्धित शिक्षा के विविध आयाम तैयार करना।
- स्वास्थ्य सुधार हेतु रचनात्मक कार्यक्रम संचालित कर सामान्यजन के स्वास्थ्य की उन्नति एवं रोग निवारण हेतु स्वास्थ्य शिविर लगाना। योग एवं प्राकृतिक, आयुर्वेदिक चिकित्सा केन्द्रों का संचालन करना।
- समाज के निर्बल एवं उपेक्षित जन समुदाय को आर्थिक सहयोग एवं जीविकोपार्जन के कार्यक्रमों से जोड़ना।
- बाल कल्याण एवं महिला कल्याण कार्यक्रम संचालित करना।
- ग्रामीण एवं शहरी विकास कार्यक्रम संचालित करना।
- साधनहीन विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु साधन उपलब्ध कराना।
- मूल्य–शिक्षकों के निर्माण एवं मूल्य–शिक्षा के प्रसार व मूल्य–शिक्षा सम्बन्धी अध्ययन एवं शोधकार्य हेतु प्रशिक्षण केन्द्र, शोध केन्द्र, पुस्तकालय, वाचनालय संचालित करना।
- योगाश्रम, वृद्धाश्रम, अनाथालय, मैत्रीकेन्द्र, कुष्ठ आश्रम, आंगनबाड़ी, बालबाड़ी, शिशुपालन, विकलांग केन्द्र आदि संचालित करना।
- आकस्मिक आपदाओं के समय जन सामान्य के सहायतार्थ कार्यक्रम संचालित करना।
- पर्यावरण एवं जैविक–आयुर्वेदिक कृषि हेतु विभिन्न कार्यक्रम संचालित करना।
- विभिन्न व्यक्तियों, संस्थाओं के मध्य सामुदायिक व रचनात्मक सम्बन्ध स्थापित करने हेतु विभिन्न कार्यक्रम संचालित करना।

मुख्य गतिविधियाँ

- महामना पं० मदन मोहन मालवीय बाल चेतना विकास केन्द्रों का संचालन करना।
- योग एवं मैत्री–ध्यान साधना केन्द्रों का संचालन करना।
- ग्रामीण ज्ञान केन्द्र का संचालन करना।
- स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करना।
- गरीब एवं नेत्र–विहीन विद्यार्थियों के लिए अध्ययन सामग्री की व्यवस्था करना।
- गौशाला एवं जैविक खाद निर्माण हेतु गोपाल केन्द्र का संचालन करना।
- पर्यावरण सन्तुलन हेतु वृक्षारोपण कार्यक्रम संचालित करना।

बालचेतना विकास केन्द्र

परिचय–

जब भी हम अपने महापुरुषों के जीवन से जुड़े हुए विभिन्न पक्षों को पढ़ते हैं, तो सभी में एक बात समान मिलती है वह है कि उनका बचपन बहुत ही सामान्य एवं संघर्षपूर्ण था। इस दृष्टि से यह बात कही जा सकती कि प्रत्येक बच्चे के अन्दर एक सुषुप्त महापुरुष विद्यमान रहता है। यदि उसे सही वातावरण एवं उचित मार्गदर्शन एवं मूल्यपरक शिक्षा दी जाय, तो कोई भी बच्चा अपने उज्ज्वल भविष्य के माध्यम से राष्ट्र गौरव बन सकता है।

हमारे देश में करोडो बच्चे ऐसे हैं, जिन्हें न तो उचित शिक्षा और न ही उचित खान–पान उपलब्ध हो पाता है। उनका बचपन गरीबी, शोषण, एवं विभिन्न यातनाओं का शिकार बन जाता हैं। ऐसे बच्चे कूड़ा बीनते, चाय–होटलों की दुकानों पर बर्तन धोते एवं किसी कोठी में झाड़ू–पोछा एवं अन्य सेवाकार्य करते मिल जायेंगे। इनके माता–पिता इन्हें जन्म तो दे सकते हैं, लेकिन इनका उचित पालन–पोषण करने में ये अपने को असमर्थ मानते हैं। क्या जिसे पढ़ने–लिखने एवं समृद्ध व सुखी जीवन जीने का अवसर मिला है? क्या उनका इनके विकास के प्रति कोई कर्त्तव्य नहीं बनता है? इस सन्दर्भ में स्वामी विवेकानंद जी के कथन का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा–

"अपने निम्नवर्ग के लोगों के प्रति हमारा एकमात्र कर्त्तव्य है– उनको शिक्षा देना, उन्हें सिखाना कि इस संसार में तुम भी मनुष्य हो। तुम लोग भी प्रयत्न करने पर अपनी सब प्रकार से उन्नति कर सकते हो"।

कुछ ऐसी ही मूल प्रेरणा के आधार पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से जुड़े शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने मिलकर सन् 2004 में काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा संस्था की स्थापना की। इस संस्था के मुख्य उद्देश्य हैं –

1. मानवीय मूल्यों की शिक्षा **(Education in Human values)**
2. आजीविका सम्बन्धी शिक्षा **(Vocational Education)**
3. शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य हेतु योग–ध्यान सम्बन्धी शिक्षा **(Yoga Education)**

संस्था ने उपर्युक्त तीनों प्रकार की शिक्षाओं को मिलाकर गरीब एवं असहाय परिवारों के बच्चों के समन्वित विकास हेतु एक शैक्षणिक कार्यक्रम तैयार किया है। इस कार्यक्रम को संचालित करने हेतु वाराणसी, सोनभद्र, महोबा एवं बलिया जिले के कुछ गाँवों में पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्रों की स्थापना की गई है। इन सभी केन्द्रों में लगभग 120 बच्चों के समन्वित विकास हेतु कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इन केन्द्रों का परिचय इस प्रकार है –

1. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   स्थान – 27 दीनदयाल नगर कालोनी नवाबगंज, वाराणसी–221010
   बच्चों की संख्या – 40
   शिक्षिकाओं की संख्या – 04
   शुभारम्भ – 2 अक्टूबर, 2006 (गाँधी जयन्ती)

2. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   स्थान – ग्राम – रौप (चुर्क रोड) राबर्ट्सगंज, जिला – सोनभद्र (उ0प्र0)
   बच्चों की संख्या – 25
   शिक्षिकाओं की संख्या – 02
   शुभारम्भ – 1 जुलाई 2008

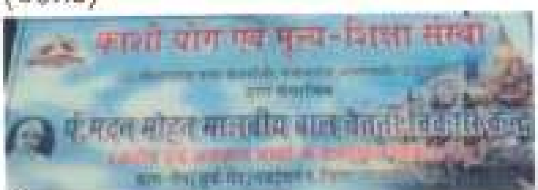

3. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   स्थान – ग्राम – शाहगंज (राबर्ट्सगंज) जिला – सोनभद्र (उ0प्र0)
   शिक्षिकाओं की संख्या – 02
   शुभारम्भ – 2 अक्टूबर 2008

4. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
स्थान – ग्राम – काकुन(चरखारी), जिला – महोबा (उ0प्र0)

शिक्षिकाओं की संख्या – 02
शुभारम्भ – 2 अक्टूबर 2008

उपर्युक्त चार केन्द्रों के माध्यम से जो प्रयोग किये गये, उनसे प्राप्त सकारात्मक परिणामों के आधार पर संस्था की प्रबन्ध–समिति ने भविश्य में निम्न जगहों पर भी केन्द्र खोलने का निर्णय लिया है–

आज सोनभद्र/ऊर्जांचल

बाल चेतना विकास केन्द्रोंका संचालन

प्रस्तावित

1. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   स्थान – ग्राम – कीरतपुरा (चरखारी), जिला – महोबा (उ0प्र0)

2. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   ग्राम – नटर्रा(चरखारी), जिला – महोबा (उ0प्र0)

3. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   ग्राम – बैहारी(चरखारी), जिला – महोबा (उ0प्र0)

4. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   ग्राम – पसहीकलाँ,(राबर्ट्सगंज) जिला – सोनभद्र (उ0प्र0)

5. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   ग्राम – शाहपुर, जिला बलिया (उ0प्र0)

6. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   ग्राम – धतूरी टोला, जिला बलिया (उ0प्र0)

7. पं0 मदन मोहन मालवीय बालचेतना विकास केन्द्र
   ग्राम – किष्किन्धापुर (टिकरी), जिला – वाराणसी (उ0प्र0)

बालचेतना विकास केन्द्रों के पठन–पाठन की पद्धति –

संस्था ने अपने शैक्षणिक कार्यक्रम को प्रारम्भ करने से पूर्व अपने देश में सरकारी–गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा अपनायी जा रही शैक्षणिक पद्धति का गहराई से अध्ययन किया। अध्ययन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर एक ऐसी शैक्षणिक पद्धति को अपनाया गया, जिससे बच्चों के व्यक्तित्व का समन्वित विकास हो। बच्चे आनन्द के साथ, खेल के माध्यम से ज्ञानार्जन कर सकें।

इन केन्द्रों में प्रयोग की जाने वाली शैक्षणिक पद्धति एवं सामग्री का विवरण इस प्रकार है–

1. केन्द्र में एकलव्य प्रकाशन भोपाल एवं एन.सी.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का उपयोग किया जाता है।
2. रोलिंग बोर्ड, चार्ट, पुस्तक मॉडल्स एवं ब्लॉक्स आदि द्वारा छोटे बच्चों को अक्षर ज्ञान, भाषा सुधार एवं सामान्य गणितीय ज्ञान प्रदान किया जाता है।
3. कविता एवं कहानी के माध्यम से बच्चों में मनोरंजन के साथ–साथ सोचने तथा समझने की क्षमता का विकास करने का प्रयास किया जाता है।

4. अभिनय, नृत्य, गीत, संगीत, बालगेम, रस्सी कूद एवं अन्य रचनात्मक खेलों के माध्यम से बच्चों को आत्माभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जाता है।
5. बच्चों के अन्दर सृजनात्मक क्षमता का विकास करने हेतु सप्ताह में एक दिन चित्रकला बनाना, रंगीन कागजों के द्वारा कोलार्ज बनाना, मिट्टी के बर्तनों–दीपों को कलात्मक तरीके से सजाना, सिलाई–कढ़ाई आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।
6. शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सुधार हेतु बच्चों को योग एवं मैत्री ध्यान आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता
7. कम्प्यूटर शिक्षा द्वारा बच्चों के अन्दर तकनीकी ज्ञान विकसित करने का भी प्रयास किया जा रहा है।
8. बच्चों के अन्दर प्रकृति प्रेम एवं सामूहिकता, भाईचारे की भावना का विकास करने हेतु वृक्षारोपण, मन्दिर–पार्क एवं कुछ ऐतिहासिक जगहों का भ्रमण कराने की भी व्यवस्था की जाती है।
9. बच्चों को साफ–सफाई एवं केन्द्रों की वस्तुओं को रखने, उनका उपयोग करने की पूरी स्वतंत्रता दी जाती है। जिससे बच्चे केन्द्र को अपना समझें।
10. वर्ष में आने वाले सभी धार्मिक एवं राष्ट्रीय पर्वों पर बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं।

बालचेतना विकास केन्द्रों के परिणामों की संक्षिप्ति रपट (वर्ष 2006 से 2009)

प्रारम्भ में बच्चों की स्थिति –

बालचेतना विकास केन्द्रों में अध्ययन करने हेतु हमने जिन बच्चों को चुना, वे अधिकतर गरीब ए असहाय परिवारों से हैं। इन बच्चों के माता–पिता दैनिक मजदूरी करके अपना तथा बच्चों का पोषण कर है। ये सुबह से ही मजदूरी की खोज में घर से निकल जाते हैं।

सुबह से शाम तक जीविकोपार्जन में लगे रहने से बच्चों के स्वास्थ्य–शिक्षा हेतु इनमें कोई रूचि न होती है। इन परिवारों के अधिकतर बच्चे कुपोषण एवं अन्य बीमारियों के ग्रसित हैं। इन परिवारों अधिकतर बच्चे सरकारी स्कूलों में केवल भोजन एवं छात्रवृत्ति के लिए ही जाते हैं। उनकी पढ़ाई–लिखाई कोई रुचि नहीं होती।

प्रारम्भ में जब इन परिवारों से कुछ बच्चों को केन्द्रों पर लाया गया, तब उनकी स्थिति कुछ इस प्रक थी –

"बच्चे बहुत ही अव्यवस्थित व गन्दे ढंग से आते थे – कपड़े फटे व गन्दे, बाल बिखरें व गन्दे, नार लम्बे, शरीर से बदबू आना आदि सामान्य सी बात थी।"

इनमें अधिकतर बच्चे आपस में अभद्र भाषा का प्रयोग करते थे व छोटी–छोटी बातों को लेकर आप में लड़ा करते थे। अपनों से बड़ों के प्रति उनमें कोई सम्मान का भाव नहीं था। इनकी पढ़ाई–लिखाई में क रुचि नहीं थी। इनमें से ऐसे बहुत से बच्चे थे, जिनका सरकारी प्राथमिक स्कूलों में कक्षा– 2,3,4 में न लिखा था, लेकिन उन्हें सामान्य अक्षर ज्ञान एवं अन्य सामान्य भाषाई शब्दों की भी जानकारी नहीं थी।"

केन्द्र में आने के उपरान्त बच्चों की स्थिति–

प्रारम्भ में बच्चों के अन्दर इन केन्द्रों पर आने में कोई रुचि नहीं थी। केन्द्र की शिक्षिकायें बार–बार इन बच्चों के घरों में जाकर उन्हें प्रेरित कर केन्द्र पर लाती थीं। परन्तु धीरे–धीरे केन्द्रों पर नया वातावरण पाकर इनमें पढ़ने–लिखने की रुचि जाग्रत हुई। अब इनमें से अधिकतर बच्चे उत्साह पूर्वक, समय पर केन्द्र पर आते हैं।

सभी बच्चों की भाषा–गणित एवं अन्य विषयों की प्रारम्भिक जानकारी में प्रगति हुई है। ये स्वयं मेहनत कर किताबों को पढ़ने–समझने का प्रयास कर रहे हैं। इन्हें जो समझ में नहीं आता, उसे वे उपस्थित शिक्षिकाओं से समझने का प्रयास करते हैं।

अब ये बच्चे नियमित रूप से अपने स्कूलों पर जाते हैं। इनकी समझ एवं पढ़ने की रुचि में इनकी कक्षा के अन्य बच्चों से कहीं अधिक प्रगति हुई है। इनकी पढ़ाई के प्रति रुचि देखकर इनके माता–पिता तथा स्कूल के अध्यापक काफी खुश हैं। ये बच्चे स्कूल तथा बालचेतना केन्द्रों में दिए गये गृहकार्य को करके ही स्कूल एवं केन्द्र पर आते हैं।

बच्चों के व्यवहारों एवं बर्ताव में भी आमूल–चूल परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है। इन बच्चों में अपने से बड़ों के प्रति सम्मान का भाव विकसित हुआ है। अब ये बड़ों को दीदी, भईया जैसे आदर सूचक शब्दों से सम्बोधित एवं प्रणाम करते हैं। प्रारम्भ में इनके अभिभावक की शिकायत थी कि बच्चे गाली बहुत देते हैं, व दिनभर काँच की गोली खेलते रहते हैं। आज इनमें से अधिकतर बच्चों ने गोली व गाली दोनों छोड़ दिया है। बच्चों के अन्दर नैतिकता का भाव भी जाग्रत हुआ है। प्रारम्भ में ये बच्चे बहुत ही स्पष्टता के साथ झूठ बोलतथे, परन्तु धीरे–धीरे इनकी इस प्रवृत्ति में सुधार हुआ है। अब बच्चों को स्वयं यह एहसास हो रहा है कि अच्छे बच्चे झूठ नहीं बोलते। अब अधिकत्तर बच्चे अपनी गलती को स्वीकार कर क्षमा मांगते हैं।

बच्चों में स्वयं कार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। केन्द्रों में उनके लिए कराये जाने वाले कार्यों में वे अधिक से अधिक सहभागी बनते हैं। उदाहरण के लिए, सभी बच्चे चाहते हैं कि वे ही किताब, कॉपी, पेन–पेंसिल आदि वितरित करें व प्रयोग के बाद सही जगह रखें।

बच्चों में सृजनात्मक कार्यों के प्रति भी रुचि बढ़ी है। इसी रुचि के आधार पर बच्चों ने विभिन्न प्रकार के रंगों से पेन्टिंग्स बनाई, कार्ड बनाये, रंगीन कागजों से कोलार्ज, आदि बनाये। मिट्टी के बर्तनों को कलात्मक ढंग से सजाया एवं सिलाई–कढ़ाई आदि के माध्यम से बैग–फाइल आदि बनाना सीखा ।

जून 2009 से बच्चों के लिए एक संगीत अध्यापिका की भी नियुक्ति की गयी। जून से दिसम्बर तक बच्चों ने हारमोनियम, ढोलक, तबला आदि वाद्य यंत्रों को बजाना सीखा है और इस दिशा में सीखने की प्रक्रिया जारी है। बच्चे भारतीय संगीत की गायन विधा से भी परिचित हो रहे हैं। वे प्रारम्भिक स्तर के संगीत ज्ञान से अब पूर्णतया परिचित हो गये हैं। वे भजन–गीत गायन कार्यक्रमों में भी बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं।

बच्चों के समन्वित व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से उन्हें योग–ध्यान एवं मैत्री भावना के अभ्यास का भी प्रशिक्षण दिया गया है। खेल–कूद एवं अन्य शारीरिक व्यायामों का समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है।

बच्चों में साफ–सफाई, खान–पान के तौर तरीकों के प्रति जानकारी बढ़ी है। स्वअनुशासन के प्रति बच्चों में बोध जाग्रत हुआ है। अब वे स्वयं अपनी जिम्मेदारी मानते हुए केन्द्र की व्यवस्थाओं में बढ़–चढ़कर भागीदारी निभाते हैं। सही समय पर केन्द्र पर आना, गृहकार्य को पूरा करना अब उनकी दिनचर्या का अंग बन गया है।

धीरे–धीरे बच्चों में विभिन्न प्रकार के सामूहिक खेलों, सृजनात्मक कार्यों, भ्रमण आदि के माध्यम से परस्पर मेल–जोल व सामूहिकता की भावना विकसित हो रही है।

अभिभावकों में आया परिवर्तन–

प्रत्येक माह के अन्त में अभिभावक गोष्ठी भी की जाती है तथा उचित समय पर उक्त समुदाय में जाकर अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित किया जाता है। जिससे हमें उनके अन्दर आये परिवर्तनों का पता चलता है। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक अभिभावकों ने संस्था के प्रति अत्यधिक रुचि दिखाई, लेकिन कुछ समय बाद उन्हें लगने लगा कि बच्चों की पढ़ाई से कहीं अधिक उपयोगी दुकानों में कार्य कराने से प्राप्त आर्थिक आय है।

ग्रामीण ज्ञान केन्द्र

परिचय–

भारत एक विशाल देश है, जिसकी अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। गाँवों के उत्थान एवं विकास में उनकी भागीदारी से ही देश का पूर्ण विकास होगा। भारत सरकार ने ग्रामीणांचल के लोगों के लिए अनेक विकास की परियोजनाएं चलाई हैं। ऐसी ही एक परियोजना ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के माध्यम से गाँवों के सामन्वित विकास हेतु संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी को स्वीकृत की गयी है।

प्रौद्योगिकी संस्थान (का०हि०वि०वि०) ने अपने इस दायित्व को क्रियान्वित करने हेतु विभिन्न जिलों में कार्यरत कुछ स्वयं सेवी संस्थाओं को चयनित किया। इसी कड़ी में राबर्टसगंज जिले के गाँवों के समग्र विकास हेतु ' ग्रामीण ज्ञान केन्द्र' के संचालन का दायित्व 'काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा' संस्था को सौपा गया है। इस क्षेत्र में ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के उद्देश्यों के अनुसार कार्य करने हेतु प्रारम्भिक चरण में 14 गाँवों को चुना गया।

चयनित गाँवों के नाम– सोनभद्र जिले के चयनित 14 गाँवों में ग्रामीण ज्ञान के कार्यक्रमों को संचालित करने हेतु संस्था ने दो केन्द्रो की स्थापना की है–

(अ) ग्रामीण ज्ञान केन्द्र
शाखा–रौप (बन्तरा), राबर्ट्सगंज
जिला–सोनभद्र, (उ०प्र०)

इस केन्द्र के अन्तर्गत निम्न गाँवों में ग्रामीण ज्ञान केन्द्र की गतिविधियाँ चलाई जाती हैं–

1. सहिजन कला 2. सहिजन खुर्द 3. रौप 4. मुसही 5. कूरा 6. हरहुआ 7. चुर्क 8. अहरौली

(ब) ग्रामीण ज्ञान केन्द्र
शाखा–पसहीकलां, राबर्ट्सगंज
जिला–सोनभद्र, (उ०प्र०)

इस केन्द्र के अन्तर्गत निम्न गाँवों में ग्रामीण ज्ञान केन्द्र की गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं–

1. पसहीकलां 2. पलियाकलां 3. मंगुराही 4. मदार 5. ओरगई

ग्रामीण ज्ञान के उद्देश्य–

1. संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके सामाजिक ढाचे (जैसे–शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि इत्यादि) में सुधार एवं स्थानीय अधिकारी एवं पंचायत अधिकारियों के सहयोग से नयी खोज की जानकारी का सही प्रयोग किस प्रकार से किया जाय, जिससे रोजगार के अतिरिक्त अवसर आम आदमी को उपलब्ध कराये जा सकें।
2. मल्टीमीडिया (बहु–माध्यमीय) साधनों का प्रयोगकर कृषि, पशुपालन, कालीन उद्योग, स्थानीय कला एवं दस्तकारी (बाँस की टोकरी, लकड़ी के खिलौने इत्यादि), उद्यान–कृषि, मूर्तिकला, सिलाई–कढ़ाई, प्राथमिक उपचार, परम्परागत एव आयुर्वेदिक औषधियों तथा लोक साहित्य, संगीत एवं स्थानीय परम्परा, करघा एव बुनाई आदि कार्यो की गुणवत्ता सुधारने एवं स्थानीय रोजगार के रूप में विकसित करने हेतु स्थानीय ग्रामवासियों को प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन, सहयोग प्रदान करना।

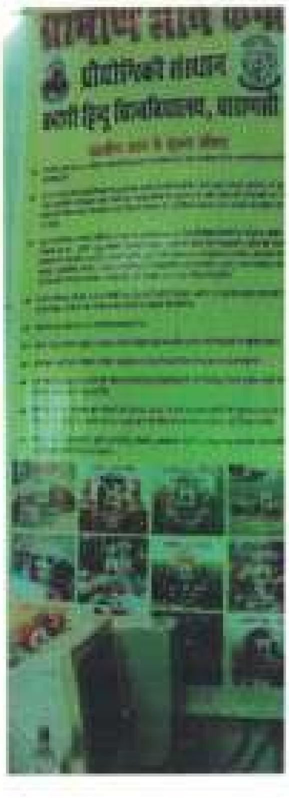

3. प्रशिक्षण कार्यक्रम, विचार–गोष्ठी एवं कार्यशालाओं द्वारा ग्राम विकास, स्वास्थ्य एवं उपयोगी जानकारियां उपलब्ध कराना।
4. स्थानीय युवक/युवतियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण द्वारा, सरकारी संस्थाओं में रोजगार प्राप्त करने हेतु सक्षम बनाना।
5. पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण हेतु वृहद स्तर पर जन जागृति कार्यक्रम संचालित करना।
6. स्थानीय कुटीर उद्योग द्वारा निर्मित वस्तुओं कृषि उत्पादों को अन्य स्थानों में विपणन करने हेतु प्रशिक्षित करना।
7. गाँव के निवासियों को सरकार की योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना।

कार्य पद्धति–

ग्रामीण ज्ञान केन्द्र द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रारम्भिक चरण में चयनित गाँवों के युवकों का चयन किया गया। इन युवाओं की संयुक्त बैठक कर केन्द्र के उद्देश्यों के विशय में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी। कुछ युवाओं को कम्प्यूटर प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। इन्हीं युवाओं के माध्यम से कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

ग्रामीण ज्ञान केन्द्र का शुभारम्भ–

दिनांक 02.08.2007 दिन रविवार को ग्राम – रौप, (बन्तरा), जिला– सोनभद्र एवं ग्राम पसही कलाँ (राबर्ट्सगंज) जिला–सोनभद्र के ग्रामीण ज्ञान केन्द्रों का उद्घाटन ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के मुख्य समन्वयक एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो0 सिद्धनाथ उपाध्याय जी के कर कमलो द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के माध्यम से हुआ।

इस उदघाटन कार्यक्रम में ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के सह समन्वयक प्रो0 काक, डॉ0 मारकन्डे राम पाठक, उपकुलसचिव (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), प्रो0 कमलाकर मिश्र, अध्यक्ष, काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा, वाराणसी एवं लगभग 14 गाँवों के 120 लोग उपस्थित हुए।

इस केन्द्र से जुडे हुए समर्पित युवाओं को प्रारम्भिक चरण में एक सप्ताह का प्रशिक्षण प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में केन्द्र के मुख्यालय पर दिया गया।

ग्राम–रौप (बन्तरा) में 'काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा संस्था' की ओर से 16 अप्रैल 2008 को एक निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ हुआ। कम्प्यूटर सिखने के इच्छुक छात्र–छात्राओं को प्रशिक्षण देने हेतु एक कम्प्यूटर टीचर की नियुक्ति की गयी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आस–पास के गाँवों के 15 छात्र–छात्राओं ने पंजीकरण कराया।

दैनिक जागरण

ग्रामीण ज्ञान केन्द्र से जुड़ी हुई अन्य गतिविधियों की रपट–

★ ग्रामीण ज्ञान केन्द्रो के अर्न्तगत आने वाले गाँवों से जुड़ी हुई महिलाओं एवं लडकियों के लिए 1 जनवरी 2009 से 10 जनवरी 2009 तक प्रौद्योगिकी संस्थान के मुख्य केन्द्र पर सिलाई–कढ़ाई एवं अन्य घरेलू साज–सज्जा से सम्बन्धित वस्तुओं के निर्माण हेतु एक कार्यशाला आयोजित की गयी। संस्था की ओर से भेजी गई लडकियों को प्रशिक्षण के बाद अन्य लोगों को प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

★ दिनांक 17 मई 2009 दिन रविवार सायंकाल–5 बजे ग्राम–रौप(बन्तरा) एवं ग्राम–पसही कलाँ के केन्द्रों पर ग्रामीण ज्ञान केन्द्र प्रौद्योगिकी संस्थान का0हि0वि0वि0 की ओर से लैपटाप, स्पीकर, मेज–कुर्सी, दरी आदि सामग्री प्रदान की गयी। साथ ही ग्रामीण ज्ञान के मुख्य समन्वयक प्रो0 सिद्धनाथ उपाध्याय की ओर से उपस्थित ग्रामवासियों को कम्प्यूटर के माध्यम से कृषि की समृद्धि, विपणन व कुटीर उद्योगों

स्वास्थ्य जागृति जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया। साथ ही लैपटाप के माध्यम से तैयार की गयी प्रशिक्षण सामग्री का सजीव प्रदर्शन किया गया।

सभी उपस्थित ग्रामवासियों ने तैयार की गयी सामग्री को उपयोगी बतलाया। साथ ही समय–समय पर उनकी जरूरतों के आधार पर और उपयोगी ज्ञान सामग्री प्रदान करने का आग्रह किया। ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के इन दोनों शाखाओं में एक सुझाव पुस्तिका रखी गयी है, जिसमें ग्रामवासी समय–समय पर अपनी जरुरतों को दर्ज कर सकते हैं। उनके द्वारा मांगी गयी जानकारी को वाराणसी केन्द द्वारा डिजीटल रूप में तैयार कर इन केन्द्रों को भेजी जाती हैं। ये केन्द्र उसे इच्छुक व्यक्ति को उपलब्ध कराते हैं।

* ग्रामीण ज्ञान केन्द्र रौप (बन्तरा)राबर्ट्सगंज के प्रशिक्षक श्री बिजेन्द्र पाण्डेय एवं श्री मृदुल द्विवेदी द्वारा 5,6,7 जून 2009 को पंचायत भवन सहजन कलां, सहजन खुर्द एवं रौप के ग्रामवासियों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में उपस्थित लोगों को कम्प्यूटर के विषय में, धान की खेती, टमाटर की खेती एवं अन्य फसलों के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी दी गयी।
* ग्रामीण ज्ञान केन्द्र पसही कलॉं के संचालक तथा 'काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा' के स्थानीय सहयोगी श्री कौशलेश पाठक जी ने 17 जून 2009 को सदर ब्लाक के खेखड़ा व बहुअरा गॉंव में एक शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में उपस्थित लोगों को कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि से सम्बन्धित सरकारी योजनाओं की जानकारी दी। कार्यकर्ता संजय कुमार ने धान की खेती के लिए सम्बन्धित भूमि एवं नर्सरी की तैयारी के समय अपनाये जाने वाली तकनीकी एवं प्रबंधन के आधुनिक तरीकों के बारे में लैपटाप की सहायता से जानकारी दी।

ग्रामीण ज्ञान केन्द्रो का निरीक्षण–

भारत सरकार के सूचना एवं प्रौद्यागिकी मंत्रालय की सहयोगी संस्था एशिया मीडिया लैब नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित "ग्रामीण ज्ञान केन्द्र" की शाखाओं ग्राम–रौप (बन्तरा) राबर्ट्सगंज एवं ग्राम पसही कला, जिला–सोनभद्र का निरीक्षण दिनांक 08.07.2009 को एशिया मीडिया लैब के निदेशक मण्डल द्वारा किया गया।

एशिया मीडिया लैब के पदाधिकारियों ने ग्रामीण ज्ञान केन्द्र द्वारा संचालित कार्यक्रमों के सन्दर्भ में उपस्थित ग्रामवासियों से जानकारी प्राप्त की।

ग्रामवासियों ने इन केन्द्रों द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षण एवं अन्य जानकारियों को अपूर्ण बतलाया। उन्होंने सुझाव दिया कि किसानों के लिए मृदा परीक्षण, मौसमी सब्जियों एवं अन्य व्यवसायिक फसलो के सन्दर्भ में अधिक से अधिक जानकारियाँ उपलब्ध करायी जाएँ। साथ ही अपने उत्पादन को बेचने हेतु उचित मूल्य एवं बाजार व्यवस्था के सन्दर्भ में भी जानकारी देने हेतु आग्रह किया।

India - News

अगस्त, सितम्बर एवं अक्टूबर (2009) माह की प्रगति आख्या –

माह – अगस्त

दिनांक – 25.08.09, 26.08.09, 27.08.09

माह – सितम्बर

दिनांक – 12.09.09, 16.09.09, 17.09.09

माह – अक्टूबर

दिनांक – 09.10.09, 10.10.09, 11.10.09,

प्रौद्योगिकी संस्थान का०हि०वि०वि० वाराणसी और 'काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा संस्था', वाराणसी के संयुक्त तत्वाधान में संचालित ग्रामीण ज्ञान केन्द्र शाखा – रौप – (राबर्ट्सगंज) के बैनर तले चयनित ग्राम – रौप (बन्तारा), सहजन खुर्द, सहजन कला, मुसही, चुर्क, कूरा, कुसुम्हा, सिरपालपुर, हरुऊवाँ आदि गाँव ग्रामवासियों के साथ चौपाल लगाकर ग्रामीण ज्ञान केन्द्र द्वारा उपलब्ध सेवाओं की जानकारी दी गयी, उपस्थित ग्रामवासियों को भारत सरकार के सहयोग से संचालित ग्रामीण ज्ञान केन्द्र की जानकारी लैपटॉप द्वारा दिखाई गयी।

ग्रामवासियों से आग्रह किया गया कि वे अपनी कृषि, कुटीर उद्योग, पशुपालन एवं स्वास्थ्य आदि से सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करने हेतु ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के कार्यालय रौप में आये और लाभ प्राप्त करें।

ग्रामीण ज्ञान केन्द्र कार्यालय प्रतिदिन प्रातः 9 बजे से सायंकाल 6 बजे तक खुला रहता है। जहाँ पर ग्रामीण ज्ञान केन्द्र से सम्बन्धित सभी सेवायें निःशुल्क उपलब्ध रहती हैं।

ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के कार्यालय रौप पर युवाओं को कम्प्यूटर प्रशिक्षण एवं इंटरनेट सेवा की सुविधा भी उपलब्ध हैं।

ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावशाली बनाने हेतु संस्था की ओर से चयनित गाँवों में जनजाग्रति कार्यक्रम भी चलाये जा रहे हैं। 'काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा संस्था' द्वारा इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों से लोगों में जागरूकता आ रही है। धीरे–धीरे लोग केन्द्र के कार्यालय पर आकर जानकारियाँ प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन अब भी लोगों में उतना उत्साह नहीं दिखाई पड़ रहा है, जितना कि होना चाहिए।

संस्था अपनी ओर से इस दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील है। संस्था की आरे से ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से संचालित करने हेतु दो प्रशिक्षकों की नियुक्ति की गई है।

श्री मृदुल द्विवेदी एवं श्री बिजेन्द्र पाण्डेय जी नियमित रूप से चयनित गाँवों में जाकर ग्रामवासियों को जागरुक कर रहे हैं, तथा ग्रामीण ज्ञान केन्द्र रौप के कार्यालय पर भी अपनी सेवायें दे रहे हैं।

विभिन्न बैठकों में ग्रामवासियों ने निम्न विषयों से सम्बन्धित जानकारियाँ उपलब्ध कराने हेतु आग्रह किया –

1. अत्यधिक कीटनाशक दवाओं के प्रयोग करने के दुष्परिणाम से कैसे उबरा जाय।
2. नरेगा जॉबकार्ड से सम्बन्धित सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी कैसे उपलब्ध हो।
3. गाँव में बढ़ती नशाखोरी, जुआ आदि से सम्बन्धित बुराईयों के रोकथाम हेतु क्या किया जाए।
4. सरकारी संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार से कैसे छुटकारा पाया जाए।
5. मृदा परीक्षण, उन्नत बीज खाद एवं उपलब्ध बाजार व्यवस्था से सम्बन्धित विस्तृत जानकारियाँ उपलब्ध करायी जाएँ।
6. प्रारम्भिक स्वास्थ्य सेवाओं एवं संक्रमण जैसी बीमारियों से बचाव हेतु ग्रामीण स्तर पर क्या किया जाए।
7. ग्राम पंचायत व्यवस्था एवं ई–गवर्नेंस जैसी सेवाओं की जानकारियाँ दी जाएँ।
8. स्वरोजगार एवं सोनभद्र जिले के लिए सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारियाँ दी जाएँ।
9. अन्य वे जानकारियाँ जो ग्रामवासियों के जीवन स्तर को सुधारने हेतु सहायक हो।

स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन

(1) संस्था सोनभद्र जिले में जिस क्षेत्र में कार्य कर रही है, वहॉ के निवासी अत्यन्त गरीब एवं अशिक्षित हैं। इनमें अनुसूचित जनजाति व अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति के लोगों की संख्या अधिक है, जो सुबह से शाम तक अपने लिए भोजन सामग्री जुटाने में लगे रहते हैं। संस्था ने ऐसे ही गरीब–असहाय व निराश्रित संवर्ग के ग्रामवासियों के स्वास्थ्य सुधार हेतु विभिन्न स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया।

पहला स्वास्थ्य शिविर दिनांक 3 फरवरी 2008 को संस्था की ओर से ग्राम– पसही कलाँ एवं ग्राम रौप (सोनभद्र) में लगाया गया। इस शिविर में अमेरिका के कैलीफोर्निया शहर एवं भारत के जाने–माने लगभग 10 डॉक्टरों की टीम ने भाग लिया।

अमेरिकी चिकित्सकों ने मरीजों का किया स्वास्थ्य परीक्षण

रौप एवं पसही कलाँ गांव में अमेरिकी डॉक्टर मार्टिनेज, डॉ० जैनी, डॉ० रीलिक, डॉ० जैन्क चोपरा व डॉ० सुशील कुक्रेजा आदि विशेषज्ञों की देख–रेख में 500 मरीजों के स्वास्थ्य का परीक्षण किया गया तथा निःशुल्क दवा दी गयी। अमेरिकी चिकित्सक दल द्वारा स्वास्थ्य शिविर आयोजित कराने में संस्था के सदस्य डॉ० मारकन्डे राम पाठक की महनीय भूमिका रही।

इस शिविर के समापन के अवसर पर डॉ० मार्टिनिज ने कहा कि जनता की सेवा करना ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है। उन्होंने शिविर में उपस्थित रोगियों की संख्या देख कर कहा कि इस तरह के अनेकों शिविरों के वर्ष पर्यन्त आयोजन की जरुरत है।

2. संस्था द्वारा आयोजित प्रथम स्वास्थ्य शिविर के अनुभव एवं क्षेत्र के गरीब पीड़ित जनसमुदाय की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए जनकल्याणकारी समाज सेवा संस्था ''कल्याण करोति'', मथुरा के सहयोग से एक विशाल निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन 22 अक्टूबर से 25 अक्टूबर 2008 की अवधि में जिला चिकित्सालय राबर्ट्सगंज (सोनभद्र) में आयोजित किया गया।

''कल्याणं करोति'' मथुरा के प्रबन्धक श्री धनंजय तिवारी के अनुसार इस शिविर में कुल चौदह सौ रोगियों ने अपना पंजीकरण कराया। जिसमें लगभग 300 रोगियों का प्रख्यात नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ० सुमित सरन सेठ (M.S) एवं डॉ० पूनम अग्रवाल (M.S) द्वारा मोतियाबिन्द, नाखून, परवाल, काला पानी आदि का उपचार एवं आपरेशन किया गया। शेष मरीजों की आंखों का परीक्षण कर निःशुल्क दवा प्रदान की गयी।

इस शिविर में शल्य क्रिया से मोतियाबिन्द आपरेशन किए गए रोगियों को निःशुल्क पलंग, बिस्तर, दवा, चश्मा एवं भोजन तथा लैंस आदि सुविधायें प्रदान की गयीं। इस शिविर के आयोजन हेतु परम पूज्य कार्ष्णि स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज की ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया। स्वामी जी के आशीर्वाद, सत संकल्प और सहयोग के कारण ही इतना बड़ा नेत्र शिविर अत्यन्त पिछड़े क्षेत्र सोनभद्र में रुग्ण व गरीब जनता को नेत्र ज्योति प्रदान कराने हेतु आयोजित किया जा सका।

आज

उक्त कार्यक्रम हेतु संस्था की ओर से लगभग 150 गाँवों के मरीजों को शिविर की जानकारी हेतु प्रचार–प्रसार किया गया। जिसका परिणाम था कि लगभग चौदह सौ रोगियों ने दूरदराज से आकर इस लोकोपकारी शिविर का लाभ उठाया। इस जिले में इस तरह का यह प्रथम और पूर्णतया सफल स्वास्थ्य शिविर था।

शिविर के समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्थानीय सांसद माननीय श्री भाईलाल कोल थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सोनभद्र जिले के मुख्य विकास अधिकारी श्री के०डी० राम ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में सी०एम०एस० जिला चिकित्सालय डॉ० अखिलेश कुमार, उप जिलाधिकारी (सदर) श्री अंजनी सिंह एवं संस्था के अध्यक्ष प्रो० कमलाकर मिश्र, कल्याणं करोति के महासचिव सुनील कुमार शर्मा एवं सर सुन्दरलाल चिकित्सालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी डॉ० मारकन्डे राम पाठक आदि विशिष्टजनों ने इस शिविर की सफलता की भूरि–भूरि प्रशंसा की। साथ ही सभी गणमान्य अतिथियों ने इस तरह के किसी भी शिविर के आयोजन हेतु अपना सहयोग देने का आश्वासन दिया। सभा में उपस्थित मुख्य विकास अधिकारी ने संस्था के पदाधिकारियों से और भी शिविर लगाने का विनम्र आग्रह किया। यहां की भौगोलिक परिस्थिति को देखकर इस तरह के शिविरों की नितांत जरूरत पर बल दिया गया। संस्था भविष्य में अपने संसाधनों के बढ़ने पर तथा किसी तरह के सरकारी–सहयोग प्राप्त होने पर इस जिले में विभिन्न तरह के स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन भविष्य में करने हेतु संकल्पबद्ध है। साथ ही एक निःशुल्क स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना करने पर गहनता से विचार कर रही है।

योग एवं मैत्री–ध्यान साधना केन्द्र

आधुनिक विज्ञान की प्रगति सराहनीय है। उसने मनुष्य को अनेकों उपहार दिए हैं। मनुष्य को निरोग बनाने ओर उसकी आयुवृद्धि हेतु अनेक चिकित्सीय विकल्प विज्ञान जगत में उपलब्ध हैं। लेकिन देखने में यह आ रहा है कि मनुष्य अपनी जीवनी शक्ति को निरन्तर खोता चला जा रहा है व नित नये असाध्य रोगों का शिकार होता जा रहा है। जबकि निरोग जीवन मनुष्य की स्वभाविक प्रकृति है। मनुष्य के लिए ऋषियों का संदेश है–

"जीवेम शरदः शतम्" व्यक्ति सौ वर्ष तक सुखपूर्वक जीए। मनुष्य प्रकृति के सान्निध्य में रहकर निरोग जीवन जीता था। आज भौतिक सुख–सुविधाओं ने मनुष्य को आलसी एवं चिन्ताग्रस्त, तनावपूर्ण जीवन जीने की पद्धति में ढाल दिया है। आपस में प्रेम–भाईचारा एवं मैत्रीभाव का उसमें निरन्तर अभाव होता जा रहा है। इस बदलाव को दृष्टिगत रखते हुए "***काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा संस्था***" का गठन किया गया। संस्था ने अपने मुख्य उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अनेक जगहों पर योग एवं मैत्री–ध्यान साधना केन्द्रों की स्थापना की। इन केन्द्रों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में तथा विद्यालयों में योग एवं मैत्री–ध्यान शिविरों का आयोजन किया गया।

संस्था ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के सुधार हेतु वर्ष 2005, 2006, 2007–08 में विभिन्न योग–ध्यान शिविरों का आयोजन किया गया। ये ध्यान साधना शिविर बनारस शहर के पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मृति उद्यान (दीनदयाल नगर कालोनी) में वर्ष के अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर माह के अन्तिम सप्ताह में आयोजित किए गये। इन शिविरों में 80 वृद्ध पुरुषों–महिलाओं, युवाओं एवं बच्चों ने भाग लिया। सभी ने इन शिविरों को लाभप्रद बताया। दूसरा योग–साधना शिविर नवम्बर 2007 में शिक्षा निकेतन सोनकीभाट, बैरिया (बलिया) के बच्चों के लिए आयोजित किया गया, जिसमें 150 बच्चों ने योग एवं ध्यान साधना की पद्धतियों को सीखा।

अन्य योग एवं मैत्री–ध्यान शिविर (बन्तरा), रौप तथा ग्राम – पसही कलां, जिला – सोनभद्र के ग्राम वासियों के लिए जनवरी – फरवरी 2007, 08 के अन्तिम सप्ताहों में आयोजित किए गये। इन दोनों शिविरों में लगभग 50 महिला–पुरुषों ने भाग लिया।

संस्था ने योग एवं मैत्री–ध्यान शिविरों का नियमित आयोजन करने हेतु योग एवं मैत्री–ध्यान केन्द्रों की स्थापना का निर्णय लिया है। ये केन्द्र ग्राम– काकुन, जिला– महोबा (उ०प्र०), ग्राम– रौप (बन्तरा), जिला– सोनभद्र एवं ग्राम– धतूरी टोला (सोनकीभाट), जिला– बलिया व वाराणसी शहर में स्थापित किए जा रहें हैं। जिनका नियमित शुभारम्भ जुलाई 2010 से होगा। इन केन्द्रों के माध्यम से योग–साधना एवं मैत्री–ध्यान का नियमित अभ्यास कराया जायेगा। इन कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने के लिए संस्था द्वारा ''***मैत्री भावना : मानसिक स्वास्थ्य एवं सुखी जीवन का चामत्करिक योग***'' पुस्तक प्रकाशित की है। साथ ही साथ मैत्री–ध्यान पद्धति को समझने और अभ्यास करने में सहायता प्राप्त करने के लिए ऑडियो एवं वीडियो कैसेट भी तैयार कराये जा रहे हैं। जिससे इन स्वास्थ्य रक्षा के कार्यक्रमों को प्रभावी रूप में जन सामान्य को उपलब्ध कराया जा सके।

गरीब एवं नेत्र–विहीन विद्यार्थियों के लिए अध्ययन सामग्री की व्यवस्था

संस्था ने अपने उद्देश्यों में गरीब एवं असहाय विद्यार्थियों के अध्ययन में सहायता प्रदान करने का भी निश्चय किया है। इस दृष्टि से संस्था प्रतिवर्ष कुछ गरीब एवं नेत्रविहीन विद्यार्थियों के लिए रिकार्डिंग, किताब–कॉपी एवं जरूरत की दृष्टि से आर्थिक एवं अन्य तरह की सहायता निःशुल्क उपलब्ध कराती है।

दुग्ध एवं जैविक खाद निर्माण हेतु श्री पंचमुखी गौशाला का संचालन

संस्था के गठन के समय से ही यह निर्णय लिया गया था कि संस्था अपनी अधिकतर गतिविधियां ग्रामीण क्षेत्रों में चलायेगी। इसी दृष्टि से संस्था ने पाँच जिलों के लगभग 50 गाँवों में अपने केन्द्र खोलने का निर्णय लिया। ये जिले हैं– सोनभद्र, बलिया, वाराणसी, महोबा एवं जौनपुर।

प्रारम्भ में संस्था द्वारा सोनभद्र एवं महोबा जिले के दो–दो गाँवों में अपने स्थायी केन्द्र स्थापित किए गये हैं। इन केन्द्रों से पाँच–पाँच गाँवों को जोड़ा गया है। इस प्रकार 20 गाँवों के समन्वित विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रम प्रारम्भ किए गये हैं। इन कार्यक्रमों में से एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम गो आधारित कृषि को प्रोत्साहित करना है।

गोमाता सदैव से हमारी श्रद्धा, समृद्धि एवं स्वास्थ्य का आधार रही है। आने वाले समय में ग्रामीण भारत के भावनात्मक, आर्थिक विकास एवं स्वास्थ्य संरक्षण का प्रमुख आधार गाय ही बनेगी। गो आधारित कृषि, गो आधारित स्वास्थ्य, गो आधारित उद्योग एवं गो आधारित ऊर्जा के सूत्रों को अपनाकर वर्तमान ग्रामीण ज्वलंत समस्याओं का समाधान सुगमतापूर्वक किया जा सकेगा।

इस दृष्टिकोण से संस्था द्वारा ग्राम– रौप (बन्तरा) जिला– सोनभद्र में तथा ग्राम– काकुन, जिला– महोबा में दो गोपालन केन्द्रों की स्थापना की गयी है। जिनमें लगभग 30 गायें रखी गयी हैं। इन गोशालाओं का उद्देश्य मात्र कुछ गोवंश को पालना भर नहीं है, बल्कि गौ को ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था एवं समग्र विकास की धुरी के रूप में स्थापित करना है।

संस्था द्वारा संचालित गोशालाओं में निम्नलिखित कार्यक्रम संचालित किये जायेंगे

(1) गोदुग्ध की विशेषताओं को गोष्ठी, हैन्डबिल, पोस्टर, दीवार–लेखन, प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाना, जिससे गोपालन के प्रति लोगों में रुचि जागृत हो।

(2) गोशाला में विभिन्न आर्थिक गतिविधियाँ चलाकर उसे आर्थिक रूप से स्वाबलम्बी बनाना ताकि स्थानीय जनता को यह व्यावहारिक संदेश दिया जा सके कि गाय अपने बलबूते अपने को तथा अपने स्वामी को पालने में पूर्णतः समर्थ है जिससे किसानों के यहां से तथाकथित अनुपयोगी गोवंश छोड़े जाने का प्रवाह घट सके।

(3) गोशाला में उन्नत एवं शुद्ध नस्ल के सांड उपलब्ध करके अपनी गायों की नस्ल में सुधार करना तथा क्षेत्रीय गायों की नस्ल सुधार में सहयोग करना।

(4) गोपालकों के लिए गोपालन पर प्रशिक्षण आयोजित करना तथा उनके लिए मार्गदर्शन का केन्द्र बनाना।

(5) बेरोजगार युवकों के लिए गोपालन के माध्यम से रोजगारपरक प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

(6) जैविक कृषि एवं बायोगैस व गोमूत्र से कीटनाशक दवाओं का निर्माण करना तथा भोजन व प्रकाश व्यवस्था हेतु ग्राम्य अंचल को स्वावलम्बी बनाना।

भविष्य में संस्था चयनित गांवों के गरीब एवं निर्बल परिवारों को गोपालन हेतु आवश्यक सहयोग प्रदान करेगी। संस्था गाय पालने वाले परिवार के बच्चे की शिक्षा का खर्च दूध के बदले उठाने का भी प्रयास करेगी। ऐसा पहला प्रयोग ग्राम– काकुन (महोबा) में इस वर्ष जुलाई 2010 से प्रारम्भ किया जायेगा।

पर्यावरण सन्तुलन हेतु वृक्षारोपण कार्यक्रम

संस्था ने पृथ्वी के बढ़ते तापमान एवं विकृत होते पर्यावरण संतुलन को रोकने हेतु वृक्षारोपण कार्यक्रम की भी शुरुआत की है। इस कार्यक्रम के तहत आम, अमरुद, केला, आँवला के फलदार वृक्षों एवं पीपल, बरगद, पाकड़, जामुन एवं नीम के वृक्षों को लगाने का वृहद् कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। इस श्रृंखला में ग्राम– रौप (बन्तरा) में सैकड़ों पैधों को लगाया जा चुका है।

इस वर्ष जुलाई माह से संस्था चयनित गावों में वृहद् स्तर पर नीम के वृक्षों को लगाने का कार्यक्रम चलायेगी। संस्था ने लगभग पांच हजार नीम के वृक्षों को रोपने का लक्ष्य तय किया है।

प्रश्न उठता है कि संस्था नीम को और वृक्षों से क्यों अधिक महत्त्व दे रही है? इसका उत्तर है कि, नीम भूमि को उर्वर बनाने, मिट्टी के क्षरण को रोकने, नुकसान पहुँचाने वाले कीटों का सफाया अथवा उन्हें प्रतिबन्धित करने, पर्यावरण में सुधार, मिट्टी की अम्लीयता को नष्ट कर उपजाऊ बनाने, बंजर परती एवं ऊसर भूमि के विकास, औषधीय उपचार, असंघटित अर्थसंरचना के पुनर्वास, कृत्रिम रसायनों, कीटनाशकों के उपयोग में कटौती, आर्थिक स्रोत एवं रोजगार–वृद्धि में सहायक और सहज सुलभ है।

लोक अनुभवों और प्रयोगशालायी खोजों से भी यह बात अब पूरी तरह स्पष्ट हो चुकी है कि नीम वृक्ष धरती पर परिस्थितिकीय संतुलन और जीवन–सुरक्षा के लिए प्रकृति का एक जरूरी एवं अनुपम उपहार है। इसके प्रत्येक भाग में एक साथ ऐसे अनेक गुण मौजूद हैं, जो सम्भवतः अन्य किसी भी वृक्ष या पौधे में नहीं पाये जाते।